



DAWAT-E-ISLAMI

રિસાલા નંબર : 131

Mendak Suwaar Bichchhu (Gujarati)

મેંડક સુવાર બિચ્છૂ

(મઅ મુસીબત કી ફઝીલત 32 રૂહાની ઇલાજ)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ જિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अः शौभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अतार कादिरि र-उवी दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ
लीजिये इश्तेफ़ाह अल्लाह एउजल ज़े कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا دَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह एउजल हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे भोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल इरमा ! ऐ अ-उमत और भुजुर्गी वाले ! (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)
नोट : अव्वल आबिर अक अक बार हुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मज्दिरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



मेंडक सुवार बिस्वू

येह रिसाला (मेंडक सुवार बिस्वू)

शौभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी हजरत
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अतार कादिरि र-उवी ज़ियाई
दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उईदू उबान में तहरीर इरमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल
भत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-भतुल मदीना से शाअेअ करवाया
है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को
(ब जरीअअे मक्तूब, ई-मैथल या SMS) मुत्तलअ इरमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-भतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मेंडक सुवार बिच्छू

शैतान लाभ सुस्ती दिवाअे येड रिसाला (31 सफ़हात)
मुकम्मल पढ लीजिये. إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى. आइतों पर
सभ्र की सोय परवान यढेगी.

दुइए शरीफ़ की इमीलत

दो जइं के सुल्तान, सरवरे जीशान, सरवरे जीशान, सरवरे जीशान, सरवरे जीशान
इरमाने मग़िरेत निशान है : मुज पर दुइए पाक पढना पुल सिरात पर नूर
है, जो रोजे जुमुआ मुज पर अस्सी बार दुइए पाक पढे उस के अस्सी साल के
गुनाह मुआफ़ हो जाअेंगे. (أَلْفَرَزْدَوْسُ بِمَأْتَوَرِ الْخُطَابِ ج ٢ ص ٤٠٨ حَدِيثُ ٣٨١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इजरेते सय्यिहुना यूसुफ़ बिन इसन इरमाते हैं :
अक मर्तबा मैं इजरेते सय्यिहुना गुन्नून् भिस्री. رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْى के साथ
किसी तालाब के कनारे छजिर था, अयानक हमारी नजर अक बहुत
बडे बिच्छू पर पडी, इतने में अक बडा सा मेंडक तालाब से निकल पडा !
बिच्छू उस मेंडक पर सुवार हो गया ! अब मेंडक तैरता हुवा तालाब के
दूसरे कनारे की तरफ़ बढने लगा. येड मन्जर देख कर हम तेजी से
तालाब के उस पार जा पडोंये, कनारे पर पडोंय कर मेंडक ने बिच्छू को
उतार दिया, बिच्छू तेजी से अक सम्त यल दिया, हम बी उस के

फरमाने मुस्तफा ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो शपस मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (त्रय)

तआकुभ में (या'नी पीछे पीछे) रवाना हुअे, कुछ दूर जा कर हम ने अेक लरजा भैज मन्जर देभा, अेक नौ जवान नशे की डालत में बेडोश पडा था, अयानक अेक भौइनाक सांप कहीं से आ निकला और उस नौ जवान के सीने पर यढ गया और उस ने जूँ डी उसे डसना याडा, बिखू ने उस पर डम्वा कर दिया और अैसा जडरीला डंक मारा, के भौइनाक सांप जडूर के असर से तल-मलाता हुवा (या'नी बेथैन डो कर) नौ जवान के जिस्म से दूर डट गया और तडप तडप कर मर गया, बिखू तालाभ के कनारे आ कर उसी मेंडक पर सुवार डो कर दूसरे कनारे की तरङ्ग रवाना डो गया. वोह नौ जवान अभी तक नशे में बेडोश पडा था. डजरते सय्यिदुना रुन्नून मिसरी ﷺ ने उस को डिलाया जुलाया तो उस ने आंभें भोल दीं, आप ने इरमाया : अै नौ जवान ! देभ भुदाअे रडमान ﷺ ने किस तरड तेरी जान बयाई है ! और मेंडक सुवार बिखू और भौइनाक सांप की अनोभी दास्तान सुनाई और मरा हुवा सांप दिभाया.

नौ जवान भ्वाभे गइलत से जाग उठा, तौभा की और अपने प्यारे प्यारे परवर दगार ﷺ के दरबारे करम-भार में अर्ज गुजार हुवा : “अै भुदाअे रडमान ﷺ ! जब अपने बन्दगाने ना इरमान के साथ तेरे इजलो अेडसान की येड शान है, तो अपने ताभेअे इरमान बन्दों पर बाराने रडमत का क्या आलम डोगा !” रावी इरमाते हैं : ईस के भा'द वोह नौ जवान अेक जानिभ यल दिया, तो में ने पूछा : “कडों का ईरादा है ?” कडने लगा : ﷺ अब मैं (दुन्या की

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरदं पाक न पढा तबकीक वो छु भद भप्त हो गया. (उर्दू)

रंगीनियों से दूर रहते हुए) जंगलों में अपने रब्बे रहमत की
 एबादत किया करूंगा. (عُيُونُ الْحِكَايَاتِ ص ۰۲ مُلَخَّصًا)

अल्लाह के हर काम में हिक्मत होती है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! मेंडक सुवार बिखू
 ने किस तरह नशे में धुत शराबी नौ जवान को अल्लाहु रब्बुल एज्जलत
 की रहमत से भौंफनाक सांप की मुसीबत से बचाया ! यकीनन
 रब्बे रहमत की हिक्मत को समझने से हम कासिर हैं, उस के हर
 हर काम में हिक्मत होती है, किसी को मुसीबत में मुत्तला करना भी
 हिक्मत तो किसी को बे तलब मुसीबत से बचा लेना भी हिक्मत.
 भा'ज अवकात बन्दे मुसीबत में ईसा होता है तो बारगाहे खुदा वन्दी
 में लुकता और उस की एबादत की तरफ़ रुख करता है और कभी औसा
 भी होता है के अल्लाह जब सर पर आ पड़ोयने वाली मुसीबत
 से डिफ़ाजत कर के ओहसान इरमाता है तो बन्दे ना इरमान ताबेअे
 इरमान हो जाता है, जैसा के इस हिकायत “मेंडक सुवार बिखू” से
 जाहिर हुवा.

गुनाहों का हे सुदूर आह ! हर घडी या रब !

कर अफ़व लाअे ! अजल सर पे हे भडी या रब !

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

अल्लाह जो करता है बेहतर करता है

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-भतुल मदीना की

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुज़ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरहे पाक पढा
उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुअर्रुह)

मत्बूआ 413 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “उयूनुल डिक्वायात” (हिस्सअे अव्वल) के सफ़हा 187 पर है : अल्लाह का अेक नेक बन्द़ा किसी जंगल की बस्ती में रहा करता था. उस के पास अेक मुर्गा, अेक गधा और अेक कुत्ता था. मुर्गा सुब्ह नमाज़ के लिये जगाता, गधे पर वोह पानी और दीगर चीज़ें लाह कर लाता और कुत्ता उस के मकान व सामान की रखवाली करता. अेक दिन मुर्गे को लोमड़ी भा गई, घर के अफ़राह इस नुकसान पर परेशान हुअे मगर उस नेक शप्स ने सभ्र किया और कहा : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है.” यन्द् दिन के भा’द बेडिये (WOLF) ने गधे को खीर झाड उला, अहले पाना गमगीन हुअे लेकिन उस नेक आदमी ने येही कहा : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है.” फिर कुछ अर्से भा’द कुत्ता भीमार हो कर मर गया, इस पर भी उस ने येही अल्फ़ाज़ दोहराअे : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है.” कुछ रोज के भा’द यकायक दुश्मनों ने जंगल की उस बस्ती पर शअभून मारा (या’नी रात में डम्बा कर दिया) और जानवरों की आवाज़ें सुन सुन कर घरों का भोज (या’नी पता) लगाया और माल व अस्बाब समेत सभ घर वालों को डैदी बना कर ले गअे. उस नेक शप्स के घर में कोई जानवर था ही नहीं जो बोलता लिहाज़ा दुश्मन को अंधेरे में उस के मकान का पता ही न चल सका, और इस तरह वोह इस आइते ना-गहानी (या’नी अयानक आने वाली मुसीबत) से मडकूज़ रहा और यूँ सभ्र के साथ साथ इस का यकीन मज़ीह मजबूत हो गया, के “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है.”

(عبرئ الحکایات ص ۲۱ المخلصا) अल्लाहु रब्बुल ईज़ज़त ईज़ज़त की उन पर रहमत हो

करमाने मुस्तक! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीक न पढा उस ने जइका की. (मैराजत)

और उन के सदके उमारी बे हिसाब मगिरत हो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अगर डाकू आ जाता तो.....?

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! इस हिकायत से दर्स मिला, के जब भी कोई बीमारी, परेशानी, बे रोजगारी वगैरा आऊमाईश आ पडे हमें येही समजना और कलना याहिये के “अल्लाह जो करता है बेहतर करता है.” क्यूंके हर मुसीबत से बडी मुसीबत होती है. म-सलन घर में थोरी हो जाये तो अगरे माली नुकसान हुआ है मगर येही कलना याहिये : “अल्लाह जो करता है बेहतर करता है.” क्यूंके अगर डाकू हम्ला करते तो शायद माली नुकसान के साथ साथ जानी नुकसान भी हो जाता ! येह भी जेहन में रहे के बसा अवकात दुन्या में मिलने वाली ने’मत बहुत बडी मुसीबत का भाईस भी बन जाती है, म-सलन किसी का पांच करोड का भोंड जुला ! ब जाहिर येह जुशी के मारे पागल कर देने वाला मुआ-मला है मगर उसे क्या मा’लूम, के उस के हक में येह ने’मत है या मुसीबत ? आया इस रकम के जरीये मस्जिद की ता’मीर की सआदत मिलेगी या इस दौलत के सबब डाकूओं के जरीये जान भी बली जायेगी ! किस को मा’लूम, के येह करोडों रुपै अैशो ईशरत में वुस्मत के लिये आये हैं या ईन्आम याइता के लिये अपने या घर के किसी अहम इर्द की बीमारी के ईलाज के लिये पछोंये हैं. ओ हां ! अैसा होना मुश्किन है. युनान्चे इस जिम्न में अेक सख्ती हिकायत सुनिये :

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શકામત કરેગા. (કુબરા)

જિગર કી તબ્દીલી (હિકાયત)

એક મુબલ્લિગે દા'વતે ઇસ્લામી કા બયાન કુછ યૂં હૈ કે મેરે એક અઝીઝ જિન્હોં ને સારી ઝિન્દગી મેહનતો મશક્કત કર કે કાફી દુન્યવી માલ જમ્મ કિયા ઓર અબ વોહ એક ફેક્ટરી કે માલિક હૈં, ઉન્હેં ડૉક્ટરોં ને ઇલાજ કે લિયે જિગર (LIVER) કી તબ્દીલી કા મશ્વરા દિયા હૈ જિસ પર કમો બેશ 75 લાખ રુપૈ કા ખર્ચ મુન્તવક્કેઅ હૈ. જિસ કે લિયે વોહ બેચારે બરસોં કી મેહનત સે કાઈમ કર્દા ફેક્ટરી બેચને કી તરકીબ બના રહે હૈં.

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ઇસ ઇબ્રત નાક હિકાયત પર ગૌર ફરમાઈયે ! જબ ઉન્હોં ને કામ કી ઇબ્તિદા કી હોગી ઓર કારોબાર તરક્કી કે ઝીને તૈ કરને લગા હોગા તો કિતની ખુશી હાસિલ હુઈ હોગી ! મગર ઉન્હેં ક્યા મા'લૂમ થા કે યેહ લાખોં રુપૈ અપને જિગર કી તબ્દીલી કે લિયે જમ્મ કર રહે હૈં. શર-ઈ મસ્અલા યાદ રખિયે, કે આ'ઝા કી તબ્દીલી જાઈઝ નહીં.

જહાં મેં હૈં ઇબ્રત કે હર સૂ નુમૂને મગર તુઝ કો અન્ધા કિયા રંગો બૂ ને કભી ગૌર સે ભી યેહ દેખા હૈ તૂ ને જો આબાદ થે વોહ મહલ અબ હૈં સૂને

જગહ જી લગાને કી દુન્યા નહીં હૈ

યેહ ઇબ્રત કી જા હૈ તમાશા નહીં હૈ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

આઝમાઈશોં કી બારિશ

મુસીબત ઝઘો ! હિમ્મત મત હારો ! મુસીબતેં اللهُ إِنِّي لَدُوْعُوْنَ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक ये ल तुम्हारे लिये तदारत है. (अल्बुख़री)

जलानों में बेडा पार करवा देंगी युनान्धे हज़रते सय्यिदुना अनस
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत है के सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के
 मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ किसी
 बन्दे से महबूबत इरमाता है तो उस पर आजमाइशों की बारिश बरसाता है
 इर जब वो ल बन्दा अपने रब عَزَّ وَجَلَّ को पुकारता है : “ओ मेरे रब عَزَّ وَجَلَّ !”
 तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरमाता है : “मेरे बन्दे ! तू जो कुछ मुज से मांगेगा मैं तुजे
 अता इरमाउंगा या तो जल्द ही तुजे दे दूंगा या उसे तेरी आभिरत के लिये
 ज़भिरा कर दूंगा.” (अल्मुरसुलुतुलक़्फ़ारातुतुमसुवे इब्न अबी दुन्याज ६ व २८० हद़िथ २१२)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-भतुल मदीना की
 मत्भूआ 853 सइहात पर मुश्तमिल किताब, “जल्नम में ले जाने
 वाले आ'माल” जिल्द अव्वल सइहा 525 पर है : हज़रते मदाइनी
 رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कहते हैं : मैं ने जंगल में ओक औरत को देखा तो गुमान
 किया के शायद ये ल बहुत भुशाल है, लेकिन उस ने बताया : “वो ल
 गर्मों और परेशानियों की हम-नशीन है, ओक मर्तबा उस के शोहर ने
 ओक बकरी ज़ुल की तो उस के बेटों में से ओक ने अपने ल्माई को इसी
 तरह ज़ुल करने का इरादा किया और उसे ज़ुल कर दिया इर वो ल
 धबरा कर पहाड की तरइ ल्माग गया और ल्मेडिया (WOLF) उसे भा
 गया, उस का बाप उस के पीछे गया और प्यास की शिदत से वो ल ल्मी
 मर गया.” तो मैं ने उस से पूछा : तुम्हें सअ्र कैसे आया ? उस ने
 जवाब दिया : वो ल तकलीफ़ तो ओक ज़ुल था जो लर गया.

इरमाने मुस्तक। صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पढींयता है. (अर।)

मुझे नाबीना रहना मन्जूर है

उजरते सय्यिदुना अबू बसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ (जो के नाबीना थे) इरमाते हैं : मैं अेक बार उजरते सय्यिदुना عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَادِرِ इमाम बाकिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने मेरे येडरे पर हाथ डैरा तो आंभें रोशन हो गई, जब दोबारा हाथ डैरा तो डिर नाबीना हो गया. उजरते सय्यिदुना इमाम बाकिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَادِرِ ने मुज से इरमाया : आप इन दोनों बातों में से कौन सी बात इप्तिवार करना याडते हैं ? ﴿1﴾ आप की आंभें रोशन हो जाअें और डियामत के रोज आप से बीनाई की ने'मत का और दीगर आ'माल का हिसाब लिया जाअे ﴿2﴾ आप नाबीना डी रहें और बिगैर हिसाबो डिताब जन्त का दाबिला नसीब हो जाअे ? मैं ने अर्ज की : जन्त में बे हिसाब दाबिला याडिये. मुझे नाबीना रहना मन्जूर है.

(शुाहदुलनुबुतु, व २६१ मुख्खुसुवु)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दुप्यारा सज तकलीडें भूल जाअेगा !

भीठे भीठे इस्लामी लाईयो ! उअरवी मुसीबतों के सामने दुन्यवी राडतों की कोई हकीकत नडीं, जहन्नम का सिई अेक जोंका उअर तर की राडत सामानियों को लुला और भाक में भिला कर रभ देगा, इसी तरड उअरवी ने'मतों के सामने दुन्यवी तकलीडें की भी कोई हैसियत नडीं, जन्त का सिई अेक डैरा जिन्दगी तर की तकलीडें को नस्यम

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (प्र. ५)

मन्सिय्या (या'नी भूला बिसरा) कर देगा और दुप्यारा बन्दा अपने सारे दुभ भूल कर येही समझेगा के मुझे कत्मी कोई तकलीफ़ पछोंयी ही नहीँ जैसा के ताजदारे मदीना, करारे कल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने भा करीना है : कियामत के दिन उस दोज़भी को लाया जायेगा जिसे दुन्या में सब से ज़ियादा ने'मतें मिलीं और उसे जहन्नम का अेक जोंका दे कर पूछा जायेगा : अै आदमी ! क्या तू ने कत्मी कोई भलाई देभी थी ? क्या तुजे कत्मी कोई ने'मत मिली थी ? तो वोह कहेगा : “भुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! नहीँ.” फिर उस जन्नती को लाया जायेगा जो दुन्या में सब से ज़ियादा तकलीफ़ में रहा और उसे जन्नत का गोता दिया जायेगा फिर उस से पूछा जायेगा : अै ईन्सान ! क्या तू ने कत्मी कोई तकलीफ़ देथी थी ? तुज पर कत्मी कोई सप्ती आई थी ? तो वोह कहेगा : भभुदा ! अै मेरे रब ! कत्मी नहीँ, मुजे कत्मी कोई तकलीफ़ नहीँ हुई और न मैं ने कत्मी कोई सप्ती देभी. (مسلم ص १००८ حدیث ५००७)

“इमान” का लिबास (लिकायत)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जब भी कोई आइत आ पडे प्वाह तवील अर्से तक बे रोजगारी या भीमारी दूर न हो या मसाईल उल न हों, हर मौकअ पर सिर्फ़ सभ्र सभ्र और सभ्र से काम लेना और आभिरत का सवाब हासिल करना याहिये. उजरते सय्यिदुना दावूद عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे भुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज की : अै मेरे रब ! तेरी रिजा के हुसूल के लिये जो मुसीबतों पर सभ्र करता है उस परेशान ईन्सान का बहला क्या है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरमाया : उस

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीफ न पढे तो वोह लोगो में से क्यूस तरीन शप्स है. (त्रिबिया)

का बढला येह है के मैं उसे ईमान का लिबास पहनाउंगी। और उस से कभी ली नहीं उताउंगी। (احياء القلوب ٤٦ ص ٩٠) अद्लाहु रब्बुल ईज़्जत
 ॐ की उन पर रडमत हो और उन के सहके हमारी बे हिसाब मङ्किरत हो।
 اَمِيْن بِجَاوِ التَّيْبِي الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वोह ईशके हकीकी की लज़्जत नहीं पा सकता

जो रन्जो मुसीबत से डोयार नहीं डोता

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

करबला वालों से बढ कर मुसीबत ऋदा कौन ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो! परेशान डाल को याहिये के अद्लाह ॐ की रिज़ा पर राजी रहे और जुद पर “ईन्डिरादी कोशिश” करते हुअे हिल डी हिल में कडे, के शहीदान व असीराने करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर जो मुसीबतें आई थीं वोह यकीनन तुज पर आने वाली मुसीबतों से करोडों गुना जियादा थीं मगर उन्डों ने हंसी पुशी बरदाश्त कीं और सभ्र कर के कुर्बे ईलाही के हकदार बने. तू कहीं बे सभ्री कर के आपिरत की सआदत से मडरूम न हो जाअे. यकीनन यकीनन यकीनन हुन्यवी परेशानियों, तंगदस्तियों, भीमारियों वगैरा में सभ्र करने वालों के लिये आपिरत की पूब पूब राहत सामानियां हैं.

रोशन कर्भें

किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना हसन बिन जकवान رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को उन की वफ़ात के अेक साल बा'द प्वाब में

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (६)

देभा तो इस्तिफ़सार किया (या'नी पूछा) : कौन सी कब्रें जियादा रोशन हैं ?
इरमाया : **قُبُورُ أَهْلِ الْمَصَائِبِ فِي الدُّنْيَا** या'नी दुन्या में मुसीबतें उठाने वालों की.
(**تَنْبِيهُ الْمُغْتَرِبِينَ** ص ११६)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देभा आप ने ! वोह घुप अंधेरी कब्र जिसे दुन्या का कोई बर्का बलब रोशन नहीं कर सकता, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**, वोह भीठे भीठे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नूर के सदके परेशान डालों के लिये नूर नूर हो कर जग-मगा उठेगी.

ज्वाब में भी औसा अन्धेरा कभी देभा न था
जैसा अन्धेरा डमारी कब्र में सरकार है
या रसूलवलाह ! आ कर कब्र रोशन कीजिये
जात बेशक आप की तो मम्बअे अन्वार है
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

काश ! हमारे बदन कैयियों से काटे जाते !

जब भी मुसीबत आये सभ्र कर के अज के डकदार बनिये, अल्लाह तबा-र-क व तआला पारह 23 सू-रतुज्जुमर की आयत 10 में इशाह इरमाता है :

إِنَّمَا يُوقِي الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ तर-ज-मअे कन्जुल इमान : साबिरों ही
को उन का सवाब भरपूर दिया जायेगा बे
بِعَيْرِ حَسَابٍ ① गिनती.

सदरुल अफ़जिल डउरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** इस आयत के तहत लिखते

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरेदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

हैं : हज़रते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे षुदा क़रम अल्लै त्ताली व ज़हे अलक़रिअे ने इरमाया के : हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़न किया जाअेगा सिवाअे सअ्र करने वालों के, के अन्हें बे अन्दाजा और बे हिसाब दिया जाअेगा और येह त्मी भरवी है के अस्खाबे मुसीबत व बला (या'नी मुसीबत ज़दा लोग) हाज़िर किये जाअेंगे, न उन के लिये मीज़ान (तराज़ू) काँम की जाअे न उन के लये दइतर (या'नी नामअे आ'माल) षोले जाअें, उन पर अजरो सवाब की बे हिसाब बारिश होगी यहां तक के दुन्या में आइय्यत की जिन्दगी बसर करने वाले अन्हें दैष कर आरजू करेंगे, के काश ! वोह अहले मुसीबत में से होते और उन के जिस्म केंथियों से काटे गअे होते, के आज येह सअ्र का अज पाते. (अज़ाँनुल इरफ़ान, स. 850)

दरिन्दों ने पेट इंस डाला था (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुद्दाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام हिन अक आदमी के पास से गुज़रे जिस का पेट दरिन्दों ने इंस कर गोशत नोय लिया था. आप عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उसे पडयान लिया, उस के पास षडे हुअे और हुआ की : या अद्दाह ! येह बन्दा तो तेरा इरमां भरदार था मैंँ इसे इसे डालत में क्यूं पाता हूं ? अद्दाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने वइय इरमाँ : “अै मूसा ! इसे ने मुज से वोह मकाम तलब किया जिस तक अपने आ'माल के साथ नहीं पड़ोय सकता था युनान्ये मैंँ ने इसे उस मकाम तक पड़ोयाने के लिये इस मुसीबत में मुअ्तला किया है.” (تَنْبِيهُ الْمُغْتَرِبِينَ ص 173)

करमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: मुज्ज पर हुइइ शरीफ़ पढो अल्लाहु एउउजुल तुम पर रडमत भेजेगा. (अनसरी)

कीयड में लिथड हुवा बय्या (लिकायत)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस लिकायत से मा'लूम हुवा के रब्बे काअेनात एउउजुल बुलन्दिये द-रजात के लिये भी नेक बन्धों को ईम्तिहानात में मुत्तला इरमाता है, बेशक अल्लाहु रब्बुल इज्जत एउउजुल के इर काम में लिकमत डोती है. अलबत्ता येह उइरी नहीं, के सिर्फ़ नेक बन्धों डी पर ईम्तिहान आअे, बसा अवकात गुनडगारों को भी मुसीबतों में मुत्तला कर के गुनाहों की आलू-दगियों से पाक किया जाता है. युनान्हे मुफ़सिरे शहीर डकीमुल उम्मत डउरते मुफ़ती अडमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ अपनी तकरीरे दिल् पजीर में इरमाते हैं : डउरते सय्यिदुना भा यजीद बिस्तामी قُدَسَ سِرُّهُ السَّامِي किसी जगड से गुजर रहे थे, मुला-डजा इरमाया, अक बय्या कीयड में गिर गया है और उस का बदन और लिबास गन्दगी में लिथड गअे हैं, लोग देभते हुअे गुजर जाते हैं, कोई परवा भी नहीं करता ! कहीं दूर से मां ने देभा, दौडती हुई आई, दो थप्पड बय्ये के लगाअे, कपडे उतार कर धोअे, उसे गुस्ल दिया. डउरत (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) को येह देभ कर वजद आ गया और इरमाया के येडी डाल डमारा और रडमते ईलाडी (عَزَّوَجَلَّ) का है. डम गुनाहों की दलदल में लिथड जाते हैं, किसी को क्या परवा ! मगर रडमते ईलाडी (عَزَّوَجَلَّ) का दरिया जोश में आता है, डम को मुसीबतों के उरीअे दुरुस्त किया जाता है और तौभा व ईबादात के पानी से गुस्ल दे कर साइ इरमाता है. (मुअद्विमे तकरीर, स. 33 मुलभसन)

इरमाने मुस्तक। صلى الله تعالى عليه و الله وسلم : मुज पर कसरत से दुरेदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरेदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्दिरत है. (भा.मि.)

जब मेहरबान मां कुछ सजा दे कर तम्बीह (या'नी जबरदार) कर सकती है तो हमारा जालिक व मालिक عَزَّوَجَلَّ इस से कहीं जियादा मेहरबान है, भा'ज अवकात सजा दे कर इसलाह इरमाता है.

रब्बे कायेनात عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन व मुअमिनात को इम्तिहानात में मुज्तला कर के इन के सय्यियात (या'नी गुनाह) मिटाता और द-रजात बढ़ाता है. लिहाजा जब ली मुसीबत आये पारह 20 सू-रतुल अ-कभूत की दूसरी आयते करीमा को जेहन में ले आयेये :

أَحْسِبَ النَّاسَ أَنْ يُلْتَكُوا مِنْهُمْ لُئْلُمْ إِيَّاهُ يَوْمَ يُنْفَخُ الْأَكُفُ عَنْ الْقُلُوبِ وَالنَّاسُ لَا يَذَكَّرُونَ ﴿٢٠﴾
 त-ज-मये क-जुल इमान : क्या लोग इस घमन्ड में हैं के इतनी बात पर छोड दिये जायें, के कहें : हम इमान लाये और उन की आजमाईश न होगी.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कोई भलाई नहीं

उज्जरे सय्यिदुना जह्जहाक اللهُ الرَّزَّاقُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ इरमाते हैं : जो हर यालीस रात में अक मर्तबा ली आइत या इिक व परेशानी में मुज्तला न हो उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के यहां कोई भलाई नहीं.

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص 10)

आइत व राहत के बारे में पुर हिक्मत रिवायत

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! दुन्यवी आइत व मुसीबत मुसल्मान के उक में अकसर बहुत बड़ी ने'मत होती है, जैसा के मन्कूल है :

इरमाने मुस्तफ़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जो मुज़ पर अक दुइद शरीफ़ पढता हे अद्लाह एउए (उस के विये अक कीरात अज लिपता हे और कीरात उडुद पडाउ जितना हे. (एम०))

अद्लाह عُزْرُ इरमाता हे : जब मैं किसी बन्दे पर रइम इरमाना याहता हूं तो उस की बुराई का बदला दुन्या ही में दे देता हूं, कभी बीमारी से, कभी घर वालों में मुसीबत डाल कर, कभी तंगिये मआश (या'नी तंगदस्ती) से, फिर भी अगर कुछ बयता है तो मरते वक्त उस पर सप्टी करता हूं उता के जब वोह मुज़ से मुलाकात करता है तो गुनाहों से औसा पाक डोता है जैसा के उस दिन था जिस दिन, के उस की मां ने उसे जना था. और मुजे अपनी ईज़ततो जलाल की कसम, के मैं जिस बन्दे को अज़ाब देने का ईरादा रफता हूं उस को उस की हर नेकी का बदला दुन्या ही में देता हूं, कभी जिस्म की सिद्धत से, कभी इराभिये रिज़क से (या'नी रोजी बढा कर), कभी अहलो ईयाल की भुशहाली से, फिर भी अगर (नेकियों का बदला देना) कुछ (बाकी) रह जाता है तो मरते वक्त उस पर आसानी कर दी जाती है उता के जब मुज़ से मिलता है तो उस की नेकियों में से (उस के पास) कुछ भी (बाकी) नहीं रहता, के वोह नारे जहन्म से बच सके. (شرحُ الصّودر ص २८)

आसाइशों पर मत झूलो !

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस रिवायत के पेशे नजर गाडियों, ईभारतों, दौलतों, सिद्धतों और तरह तरह की ने'मतों की अपने ठीपर कसरत को देण कर उर जाना याहिये के कहीं येह दुन्या में नेकियों की जजा न हो और गुरबतों, आइतों, बीमारियों और तरह तरह की मुसीबतों का अपने ठीपर सिद्धिसला देण कर सभ्र करना और हिल बडा

इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब मे मुज़ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ.श.)

रभना याहिये, के हो सकता है येह आभिरत की राहत सामानियों का पेशभैमा हो. हम अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ से दोनों जहानों की भलाईयां तलब करते हैं.

इर था के ईस्यां की सज्ज, अब होगी या रोजे जज्ज

दी उन की रडमत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुसीबत की अशुभ हिक्मत (हिकायत)

हजरते सय्यिदुना عَبْدُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا ने इरमाया के अक नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ के दरबार में अर्ज की : औ मेरे रब्बुल عَزَّ وَجَلَّ ! भोमिन बन्दा तेरी ईताअत करता और तेरी मा'सियत (ना इरमानी) से बयता है (लेकिन) तू इस से दुन्या लपेट लेता और इस को आजमाईशों में डालता है. जब के काफ़िर तेरी ईताअत नहीं करता बल्के तुज़ पर और तेरी मा'सियत (ना इरमानी) पर जुर-अत करता है लेकिन तू उस से मुसीबत को दूर रभता और उस के लिये दुन्या कुशादा कर देता है (आभिर इस में क्या हिक्मत है ?) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उन की तरफ़ वइय इरमाई : बन्दे भी मेरे हैं और मुसीबत भी मेरे ईप्तिवार में है और सब मेरी इम्द के साथ मेरी तस्बीह करते हैं, भोमिन के जिम्मे गुनाह होते हैं तो मैं उस से दुन्या को दूर कर के उस को आजमाईश में डालता हूँ तो येह (आजमाईश व मुसीबत) उस के गुनाहों का कफ़ारा बन जाती है हत्ता के वोह मुज़ से मुलाकात करेगा तो मैं उसे नेकियों का बदला दूंगा. और काफ़िर की (दुन्यवी अ'तिबार से) कुछ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरदे पाक पढा अदलाह उरुज उस पर दस रडमतें बेजता है. (स्)

नेकियां छोती हैं तो मैं उस के लिये रिज़ूक कुशादा करता और मुसीबत को उस से दूर रभता हूं तो यूं उस की नेकियों का बदला दुन्या में ही दे देता हूं उता के जब वोड मुज से मुलाकात करेगा तो मैं उस के गुनाहों की उस को सजा दूंगा.

(احياء العلوم ج ٤ ص ١٦٢)

हाथों हाथ सजा

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! रब्बुल अनाम غُرَّ وَجَلَّ के उर उर काम में छिकमतें छोती हैं. तकलीफ़ पर सभ्र कर के अज लासिल करना याडिये क्यूंके आझतो बलिय्यात, कफ़रअे सय्यिआत और भाईसे तरकिकिये द-रजात छोती हैं. (या'नी आझतें और बलाअें गुनाह मिटाने और द-रजे बढाने का जरीआ छोती हैं) युनान्ये ताजदारे रिसालत, मलबूबे रब्बिल इज्जत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अदलाह उरुज जब किसी बन्दे से लवाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सजा झैरी तौर पर उसे दुन्या ही में दे देता है.

(مُسْنَدُ إمام أحمد بن حنبل ج ٥ ص ٦٣٠ حديث ١٦٨٠٦)

आभिरत की मुसीबत से दुन्या की मुसीबत आसान है

आह ! हम तो गुनाहों में सरापा डूबे हुए हैं, काश ! जब ली कोई मुसीबत पेश आये उस वक्त येड जेहन बनाना नसीब हो जाये, के शायद आभिरत के बजाये दुन्या ही में सजा दे दी गई है. इस तरह उम्मीद है के सभ्र आसान हो जायेगा. भुदा की कसम ! मरने के बा'द मिलने वाली सजा के मुकाबले में दुन्या की सजा इन्तिहाई आसान है, दुन्या की मुसीबत आदमी बरदाशत कर ही लेता है मगर आभिरत की

करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना बूल गया वोह जन्नत का रास्ता
बूल गया. (अ. ५)

मुसीबत बरदाश्त करना ना मुम्किन है यहाँ तक के अगर कोई कइ दे, के मैं कब्र या जहन्नम का अजाब बरदाश्त कर लूंगा तो वोह काफ़िर हो जायेगा.

हमारे हक में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो! अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) जो करता है यकीनन वोह सहीइ करता है, बसा अवकात भा'ज मुआ-मलात बन्दे की समज में नहीं आते लेकिन बहुत मर्तबा उस के हक में उसी में बेहतरी होती है. युनान्चे पारह 2 सू-रतुल ब-करह की आयत 216 में ईशा'द होता है :

وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا
وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

(प. २, البقرة: २१६)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान: और करीब है, के कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे हक में बेहतर हो और करीब है, के कोई बात तुम्हें पसन्द आये और वोह तुम्हारे हक में बुरी हो और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) जानता है और तुम नहीं जानते.

हर ओक को इम्तिहान के लिये तय्यार रहना चाहिये

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो! ईमान के साथ जिन्दगी गुजारने वाला ही काम्याब है, बडा नाजुक मुआ-मला है, शैतान हर वक्त

इरमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदें पाक न पढा तउकीक वोउ बढे अफ्त हो गया. (उंउः)

ईमान की घात में लगा रहता है. मुसीबत आने पर सभ्र करते हुअे उर डाल में रब्बे जुल जलाल جَزَّوَجَلَّ की रिजा पर राजी रहना याडिये. पाक परवर दगार جَزَّوَجَلَّ उमारा मालिको मुफ्तार है. जिसे याडे बे डिसाअ जन्नत में दाअिल इरमाअे और जिसे याडे ईमिडान में मुफ्तला कर के सभ्र की तौईकी अता इरमा कर ईन्आमो ईकराम की आरिशें इरमाअे. मोमिने कामिल वोडी है जो उर डाल में रब्बे जुल जलाल جَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुजार अन्दा अन कर रहे. मुसीबतों की वजह से अड्लाड जَزَّوَجَلَّ पर अ'तिराज कर के फुड को उमेशा के लिये जडन्नम के उवाले कर देने वाला शप्स अहुत डी अडा अद नसीअ है. उर मुसल्मान को ईमिडान के लिये तय्यार रहना याडिये, फुदाअे रहमान جَزَّوَجَلَّ का पारड 2 सू-रतुल अ-करड की आयत नम्बर 214 में इरमाने ईअ्रत निशान है :

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتَّخَلَّوْا الْجَنَّةَ وَ لَسَايَاتِكُمْ مِثْلُ النِّزِينَ خَلَّوْا مِنْ قَبْلِكُمْ (डालत) न आई.

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : क्या ईस गुमान में डो, के जन्नत में अले जाओगे और अली तुम पर अगलों की सी इदाद (डालत) न आई.

कंधियों से गोशत नोये जते थे

सदरुल अइअिल उअरते अड्लामा मौलाना सख्यिद मुडम्मद नईमुदीन मुरादआआदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي अजाईनुल ईरइान सईडा 71 पर मुन्द-र-जअे आला आयते करीमा के तडूत इरमाते हैं : और जैसी सफ्तियां उन (या'नी अगले मुसल्मानों) पर गुजर युकी अली तक

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर એક બાર દુરુદે પાક પઢા અલલાહ ઉસ પર દસ રહમતે ભેજતા હૈ. (૫)

તુમ્હેં પેશ ન આઈં. યેહ આયત ગઝવએ અહ્જાબ કે મુ-તઅલ્લિક નાઝિલ હુઈ જહાં મુસલ્માનોં કો સર્દાં ઓર ભૂક વગૈરા કી સપ્ત તક્લીફેં પહોંચી થીં. ઈસ મેં ઉન્હેં સખ્ર કી તલ્કીન ફરમાઈ ગઈ ઓર બતાયા ગયા કે રાહે ખુદા મેં તકાલીફ બરદાશત કરના કદીમ સે ખાસાને ખુદા કા મા'મૂલ રહા હૈ, અભી તો તુમ્હેં પહલોં કી સી તક્લીફેં પહોંચી ભી નહીં.¹ “બુખારી શરીફ” મેં હઝરતે સય્યિદુના ખબ્બાબ બિન અરત રَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે મરવી હૈ કે હુઝૂર સય્યિદે આલમ જાતે થે, ઝમીન મેં ગઢા ખોદ કર ઉસ મેં દબા દિયે જાતે થે ફિર આરે સે ચીર કર દો ટુકડે કર દિયે જાતે થે ઓર લોહે કી કંઘિયોં સે ઉન કે ગોશત નોચે જાતે થે ઓર ઈન મેં સે કોઈ મુસીબત ઉન્હેં ઉન કે દીન સે રોક ન સકતી થી.”

(بخاری ج ٤ ص ٣٨٦ حديث ٦٩٤٣ مَلَخَصًا)

મુસીબત છુપાને કી ફઝીલત

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! બીમારી ઓર પરેશાની પર શિક્વા કરને કે બજાએ સખ્ર કી આદત બનાની ચાહિયે કે શિકાયત કરને સે મુસીબત દૂર નહીં હો જાતી બલકે બે સખ્રી કરને સે સખ્ર કા અજ ઝાએઝ હો જાતા હૈ. બિલા ઝરૂરત બીમારી વ મુસીબત કા ઈઝહાર કરના ભી અચ્છી બાત નહીં. યુનાન્યે હઝરતે સય્યિદુના ઈબ્ને અબ્બાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં કે રસૂલે અકરમ, નૂરે મુજસસમ

مدینہ

1 : ખઝાઈનુલ ઈરફાન, સ. 71

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : श्री शिष्य मुज पर दुर्दे पाक पढना भूल गया वोड जन्नत का रास्ता भूल गया. (بخاری)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने ईशाद ईरमाया : “जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे छुपाया और लोगों से उस की शिकायत न की तो अद्लाहु एَزَّ وَجَلَّ पर उक हें के उस की मग़्फ़िरत ईरमा दे.”

(مُعْجَم أَوْسَط ج ١ ص ٢١٤ حدیث ٧٣٧)

दाढ में दई के सबब में सो न सका ! (छिकायत)

हुज्जतुल ईस्लाम उअरते सय्यिहुना ईमाम मुहम्मद गजाली नकल करते हें : उअरते सय्यिहुना अडूनई बिन कैस नकल करते हें : अक बार मेरी दाढ में शदीद दई हुवा जिस के सबब में सारी रात सो न सका. मैं ने दूसरे दिन अपने ययाजान की षिदमत में शिकायत की, के “मैं दाढ के दई की वजह से सारी रात सो न सका.” ईस बात को मैं ने तीन बार दोहराया. ईस पर उन्हों ने ईरमाया : तुम ने अक ही रात में डोने वाले अपने दई की ईतनी ज़ियादा शिकायत कर डाली ! डालां के मेरी आंभ को जाअेअ हुअे तीस भरस डो युके हें, (अगर्चे देअने वालों को मा'लूम डो मगर अपनी उबान से) मैं ने कत्मी किसी से ईस की शिकायत नहीं की. (أَحْيَاءُ الْعُلُوم ج ٤ ص ١٦٤) अद्लाहु रब्बुल ईज्जत एَزَّ وَجَلَّ की उन पर रडमत डो और उन के सदेके डमारी डे छिसाभ मग़्फ़िरत डो.

أَمِينٍ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जभां पर शिक्वअे रन्जे अलम लाया नहीं करते

नभी के नाम लेवा गम से धबराया नहीं करते

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तक़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (अबुस)

32 ॐ हानी ॐ बाबा

गुमशुदा को बुलाने के 3 आ'माल

«1» ओक बडे कागज के यारों कोनों पर **يَا حَيُّ** लिख कर आधी रात को या किसी भी वक्त दोनों हाथों पर रख कर भुले आस्मान तले भडे हो कर हुआ दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** या तो गुमशुदा इर्द जल्द वापस आ जायेगा या उस की जबर मिल जायेगी. (मुदत : ता हुसूले मुराद)

«2» 40 दिन तक रोजाना दो रकअत नज़्द पढ कर **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 119 बार पढिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आगा हुआ शप्स वापस आ जायेगा.

«3» अगर कोई चीज़ गुम हो गई हो या कोई शप्स गाईब हो गया हो तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 1008 बार पढिये, अल्लाह उज़्जल ने याहा तो गुमशुदा शे या आदमी मिल जायेगा. (मुदत : ता हुसूले मुराद)

गुमशुदा घन्सान, गाडी और माल वापस मिले (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)

«4» अल्लाहु रब्बुल ईज़्जत की रहमत पर मजबूत तरोसे के साथ चलते फिरते, वुजू बे वुजू जियादा से जियादा ता'दाद में या रब्बे मूसा या रब्बे कलीम. **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط** पढते रहिये. इसी दौरान यन्त बार दुर्रद शरीफ़ भी पढ लीजिये. गुमशुदा घन्सान, सोना, माल, गाडी वगैरा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मिल जायेंगे. बल्के दीगर हाज़त के लिये भी येह अमल मुफ़ीद होगा. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

करमाने मुस्तकः صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुबदे पाक पढा, उसे कियामत के दिन मेरी शक़ायत मिलेगी. (अबुअरुफ)

हाजतें पूरी होने के लिये 3 आ'माल

﴿5﴾ يَا اللهُ 39 बार लिख कर बाजू पर बांध कर या गले में पहन कर जिस हाकिम या अफसर के पास जिस ज़रूरत काम के लिये जाये जिस हाकिम या अफसर के पास जिस ज़रूरत काम के लिये जाये, वो उस की हाजत पूरी करे. **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿6﴾ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ 321 बार पढ़ कर हरबे तौफ़ीक़ कोई भीठी खीज बख्यों में तकसीम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मुराद पूरी होगी.

﴿7﴾ قَلَّتْ حِيلَتِي أَنْتَ وَسَيِّئَتِي آذَرَكْنِي يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ¹ उठते बैठते, चलते फिरते, भा पुजू बे पुजू पढते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मुराद पूरी होगी.

बर्फ़बारी रोकने के लिये

﴿8﴾ عَزَّوَجَلَّ وَيَا حَافِظُ, يَا خَافِضُ लोहे के तवे की उलटी तरफ़ अल्हाड **عَزَّوَجَلَّ** के येह दोनों नाम मुबारक उंगली से लिख कर आस्मान के नीचे रख दीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बर्फ़बारी बन्द हो जायेगी.

दुश्मन से हिफ़ाज़त के 4 अवराह

﴿9﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ चलते फिरते उठते बैठते ब कसरत पढने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** दुश्मन के शर से हिफ़ाज़त होगी और रहमते रबबे गइफ़ार **عَزَّوَجَلَّ** से दुश्मने अय्यारो मक्कार के तमाम वार ખाली जायेंगे.

مدینہ
1 : तरजमा : या रसूलव्हाड صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे हीले ખत्म हो गये आप ही मेरा वसीला हूँ मुझे संभालिये.

करमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मैरान)

﴿10﴾ **يَا قَابِئُ، يَا بَاسِطُ** 30 बार हर रोज़ पढिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुश्मन पर इत्त हासिल होगी.

﴿11﴾ **يَا حَافِظُ، يَا خَافِضُ** 500 बार पढिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुश्मन के सटमे से अमान में रहेंगे.

﴿12﴾ अगर ताकत वर दुश्मन से जान व माल को अतरा लाहिक हो तो हर नमाज़ के बाद **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 421 बार (अव्वल आभिर अक बार दुरुद पाक) पढिये फिर गिउगिउा कर हिफ़ाज़त की दुआ कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुश्मन के शरों इसाट से मडफूज़ रहेंगे.

कश्ती (और हर तरह की सुवारी) की हिफ़ाज़त के 2 अवरार

﴿13﴾ कश्ती में सुवार होने से पहले **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 21 बार पढ लेने वाले का सारा सफ़र **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आराम व सुकून के साथ कटेगा और वोह कश्ती डूबने से बची रहेगी.

﴿14﴾ कश्ती या किसी भी सुवारी पर सुवार होते वक्त **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 132 बार पढ लेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** रास्ते की आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी यहाँ तक के जोरदार तूफ़ान में भी कश्ती डूबने से बची रहेगी.

सफ़र में आसानी व काम्याबी के 2 आ'माल

﴿15﴾ सफ़र शुरुअ करने से पहले **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 मर्तबा पढ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सफ़र में आसानी होगी.

﴿16﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 49 बार लिख कर सफ़र में साथ रखने से घर आने

करमाने मुस्तफ़। صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (क़ुरआन)

तक जमीनी और दरियाई आइतों से डिफ़ाजत रहेगी और जिस मकसद के लिये सफ़र किया डोगा उस में काम्याबी नसीब डोगी. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

शादी की रुकावट के 3 इहानी घलाष

«17» जिन लडकियों की शादी न डोती डो या मंगनी डो कर टूट जाती डो वोड नमाजे इश के बा'द **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 312 बार पढ कर अपने लिये नेक रिश्ता मिलने की दुआ करें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**, जल्ल शादी डो और भावन्ड भी नेक मिले.

«18» **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 143 बार लिख कर ता'वीज बना कर कुंवारा अपने बाजू में बांधे या गले में पहन ले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस की जल्ल शादी डो जाओगी और घर भी अच्छा थलेगा.

«19» लडकी या लडके के रिश्ते में रुकावट डो या ईस में बन्दिश का शुभा डो तो रोजाना बा'द नमाजे इश बा वुजू डर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط** के साथ सू-रतुतीन 60 मर्तबा पढिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** थालीस दिन के अन्डर अन्डर काम डो जाओगा.

हादिसात से डिफ़ाजत वाला अमल

«20» **بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ**¹ (अबुल्लाउरुज ६/२०-६/२१-६/२२-६/२३-६/२४-६/२५-६/२६-६/२७-६/२८-६/२९-६/३०) (५०१५)

अेक साडिख का कडना डै : घर से बाडर निकलने की (डिपर डी डुई) दुआ

1 : अल्लाड **عَزَّوَجَلَّ** के नाम से, में ने अल्लाड **عَزَّوَجَلَّ** पर भरोसा किया, भुराई से भयने और नेकी करने की कुव्वत अल्लाड **عَزَّوَجَلَّ** ही की तरफ़ से डै.

(अबिस) इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक ये ल तुम्हारे लिये तदारत है.

जब से पढनी शुरुअ की है الْحَمْدُ لِلَّهِ कर्ण बार छापिसे से बया हूं और न जाने कितनी बार तो मेरी गाडी के शीशे दूसरी गाडियों के साथ टकरा गये हैं लेकिन अब्दाह के इज़ल से कोर्ण छापिसा या नुक्सान नही हुवा.

मुकदमा ज़तने के लिये 2 आ'माल

﴿21﴾ जो ना ज़र्रज मुकदमे में इंस गया हो, मुकदमे की तारीख वाले दिन **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 654 बार पढ कर कोर्ट में जाये, इंसला र्णसी के छक में होगा.

﴿22﴾ **وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا** (पे 11: 181) मुकदमे की काम्याबी के लिये रोजाना किसी भी अेक नमाज़ के आ'द 133 बार पढिये. छक पर हों तो पढिये, के नाछक पढने वाला अज़ाबुद मुसीबत में गिरिफ़तार हो सकता है.

खिल्ला कशी में योट जाई हो तो

﴿23﴾ **يَا وَاحِدٌ** 3000 बार 11 दिन तक रोजाना पढिये. (अवल आबिर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरद शरीफ़ पढिये) **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ** दिल पुर सुकून हो जायेगा.

कैड से रिहाई के 2 आ'माल

﴿24﴾ अगर कोर्ण शप्स जुल्मन कैड हो गया हो तो खलते फिरते, उठते बैठते **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** कसरत से पढे और **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** कागज़ पर

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْبِرَّ وَسَلَّمَ. तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रुद पढो के तुम्हारा दुर्रुद मुज तक पछोयता छे. (इरान)

लिख कर ता'वीज बना कर पढ़न भी ले, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जल्द रिहाई पायेगा.

﴿25﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** ब कसरत पढा करे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कैद से जल्द रिहा हो जायेगा.

डूँयें या नहर के पानी की कमी का इहानी घलाज

﴿26﴾ अगर किसी डूँयें या नहर का पानी कम हो जाये तो ठीकरी पर लिख कर उस डूँयें या नहर में डाल दीजिये **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** पानी में ब-र-कत हो जायेगी.

दुकान, मकान, जानदान व सामान की

छिड़कत के 5 आ'माल

﴿27﴾ दुकान या मकान या माल व अस्बाब पर रोजाना **سُبْحَانَ اللَّهِ** 49 बार पढ कर दम कर दिया जाये तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुफ्तलिङ्ग नुकसानात से छिड़कत होगी.

﴿28﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 69 बार कागज पर लिख (या लिखवा) कर फेंक बनवा कर मकान या दुकान वगैरा में लटका दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वहां आसेब नही आयेगा और अगर पडले से होगा तो भाग जायेगा.

﴿29﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** पढ कर अगर इस्ति'माल की चीजों पर दम कर दिया जाये तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** छिड़कत भी होगी और ब-र-कत भी.

﴿30﴾ रकम और हर किस्म की चीज के लैन दैन (या'नी लेने और देने) से

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه وآله وسلم: जिस ने मुज पर दस भरतभा दुरेदे पाक पढा अद्लाह उस पर सो रलभते नाजिल करमाता है. (फ़रान)

पहले **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 21 बार पढने की ज़ो आदत बना लेंगे, वोह **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस मुआ-मले में नुकसानात से बचे रहेंगे.

﴿31﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 65 बार लिख कर अपने पास रखने वाला ज़ालिमों के जुल्म से मलकूज़ रहेगा.

सर दई से भिनटों में नज़ात

(अयान कर्दा तिब्बी और देसी एलाज अपने तबीब के मश्वरे से कीजिये)

अक यम्मय यीनी और दो अदद बडी एलाययियों के दाने निकाल कर मुंड में रख लीजिये. और एन्हें खूंगम की तरह यभाते और यूस यूस कर रस पीते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** तकरीबन पांय भिनट में शदीद सर दई से नज़ात मिल जायेगी, यन्द दिन के एस्ति'माल से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दई सर का भरज जाता रहेगा. शूगर के मरीज़ यीनी के बज़ाओ 12 अदद हरे पोदीने के पत्ते एलाययियों के साथ एस्ति'माल करें.

यूरिक ओसिड का घलाज, मूली और लीमूं से

अक दरभियानी साँठज की मूली के टुकडे कर के उस पर अक लीमूं छिडक कर, दीगर नमक मसावा डाले बिगैर नहार मुंड जा लीजिये अक घन्टे तक और कोई यीज मत पआएये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** “यूरिक ओसिड” नोर्मल हो जायेगा. (येह अमल 7 रोज तक कीजिये)

इरमाने मुस्तफ़ा، عَمَلِي اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रउमतें भेजता है. (स्)

शूगर, कोलेस्ट्रोल और हाई ब्लड प्रेशर का आसान धलाज

करेले छील कर सुभा लीजिये, फिर बीज समेत पीस कर पावडर बना लीजिये. सुबह व शाम आधी आधी यमयी पाने से शूगर, हाई ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रोल के मरज में इन्शाअल्लाह उन्का इलाज होगा.

मुप्तलिफ़ बीमारियों और परेशानियों का इहानी धलाज

﴿32﴾ जिस्मानी, नफ़िसयाती, मुप्तलिफ़ बीमारियों, टेन्शन, डिप्रेशन, अ-सरात, ज़ादू, नज़रे बद और बन्दिश वगैरा के लिये अेक अज्जुबुल असर अमल है. तमाम घर वाले अगर येह अमल करते रहें तो इन्का इलाज होना याकियों और परेशानियों से नज़ात मिले, घर अमन का गइवारा बने.

इज की दो सुन्नतों और ज़ोइर, मगरिब व ईशा के इजों के बा'द वाली दो सुन्नतों में सू-रतुल इतिहा के बा'द कुरआने करीम की आपिरी छ सूरतें ईस तरह पढिये : पहली रकअत में सू-रतुल काफ़िरन, सू-रतुन्नसर और सू-रतुल्लहब और दूसरी रकअत में सू-रतुल ईप्लास, सू-रतुल इलक और सू-रतुन्नास पढिये. हर सूरत के इब्तिदा में بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढिये. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा) कभी कभी येह सूरतें तर्क कर के कोई और सूरत पढ लीजिये. मक-त-अतुल मदीना की मन्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अक्वल सफ़हा 548 पर मस्अला नम्बर 30 पर है : सूरतों का मुअय्यन (Fix) कर लेना, के ईस नमाज में हमेशा वोही सूरत पढा करे, मकइहे (तन्जीही) है, मगर जो सूरतें अहादीस में वारिद हें उन को कभी कभी पढ लेना मुस्तहब है, मगर

کرماتے موشکافا: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: شمسِ موزا پر دُرڈے پاک پھنا بول گیا وولڈ جننت کا رستا بول گیا. (طبرانی)

مؤڈا-ومت (ڈمेशगी) न करे के कोई वाजिब न गुमान कर ले.

गमे मदीना, बकीअ,
मगिरेत और बे
हिसाब जन्तुल
हिरदौस में आका
के पडोस का तालिब



23 स-इरुल मुजफ्फर 1437 सि.हि.
06-12-2015

येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शाही गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे भीलाह वगैरा में मक-त-भतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी इलों पर मुशतमिल पेम्फ्लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाडकों को ब निख्यते सवाब तोडके में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाईल रखने का मा'मूल बनाईये, अम्बार इरोशों या बख्यों के जरीअे अपने मडल्ले के घरों में डरबे तौईक रिसाले या म-दनी इलों के पेम्फ्लेट डर माड पडोंया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाईये और भूब सवाब कमाईये.

माخذومراج

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالمعرفه بیروت	تنبيه المخرين		قران مجيد
دارصادر بیروت	احياء العلوم	مكتبة المدینة باب المدینة کراچی	خزان العرفان
دارالکتب العلمیة بیروت	مکافئة القلوب	دارالکتب العلمیة بیروت	بخاری
دارالکتب العلمیة بیروت	عیون الکفایات	دارابن حزم بیروت	مسلم
مرکز البسنت برکات رضا ابھند	شرح الصدور	داراحیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
مکتبہ الحقیقیہ استنبول	شواهد النبوة	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد بن حنبل
مکتبہ المدینة باب المدینة کراچی	بہار شریعت	دارالکتب العلمیة بیروت	معجم اوسط
قادری پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور	معلم تقریر	دارالکتب العلمیة بیروت	الغردوس برأثر الخطاب
☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	المکتبہ العصریة بیروت	المرض والکفارات

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिंक हुआ और उस ने मुज पर दुइदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (हंज)

ईडरिस

उन्वान	स.	उन्वान	स.
दुइद शरीफ़ की इजीवत	1	दाढ में दई के सभभ	
अल्लाह के हर काम में छिकमत होती है	3	में सो न सका ! (छिकायत)	21
अल्लाह जो करता है बेहतर करता है	3	32 इरानी ईलाज	22
अगर डाकू आ जाता तो?	5	गुमशुदा को बुलाने के 3 आ'माल	22
जिगर की तब्दीली (छिकायत)	6	गुमशुदा ईन्सान, गाडी और माल	
आजमाईशों की बारिश	6	वापस मिले (إِن تَوَلَّوْاْ مُدْبِرِيْكُمْ)	22
मुजे नाबीना रहना मन्जूर है	8	डाजतें पूरी होने के लिये 3 आ'माल	23
दुप्यारा सभ तकलीफें भूल जायेगा !	8	भईबारी रोकने के लिये	23
“ईमान” का लिबास (छिकायत)	9	दुश्मन से छिंकाजत के 4 अवराद	23
करबला वालों से भद कर मुसीबत		कशती (और हर तरफ़ की सुवारी) की	
जदा कौन ?	10	छिंकाजत के 2 अवराद	24
रोशन कब्रें	10	संहर में आसानी व काम्याबी के 2 आ'माल	24
काश ! हमारे बदन केंयियों से काटे जाते !	11	शादी की रुकावट के 3 इरानी ईलाज	25
दरिन्दों ने पेट फाड डाला था (छिकायत)	12	छादिसात से छिंकाजत वाला अमल	25
कीयड में लिथडा हुआ बय्या (छिकायत)	13	मुकदमा जतने के लिये 2 आ'माल	26
कोई लमलाई नहीं	14	बिल्ला कशी में खोट पाई हो तो	26
आइत व राइत के बारे में पुर छिकमत रिवायत	14	कैद से रिहाई के 2 आ'माल	26
आसाईशों पर मत झूलो !	15	कूंओं या नहर के पानी की कमी का	
मुसीबत की अज्जब छिकमत (छिकायत)	16	इरानी ईलाज	27
छाथों छाथ सज्जा	17	दुकान, मकान, भानदान व सामान	
आभिरत की मुसीबत से दुन्या की		की छिंकाजत के 5 आ'माल	27
मुसीबत आसान है	17	सर दई से भिनटों में नजत	28
हमारे हक में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम	18	यूरिक असिड का ईलाज, मूली और लीमूं से	28
हर अक को ईम्तिदान के लिये		शूगर, कोलेस्ट्रॉल और छाई	
तय्यार रहना चाडिये	18	ब्लड प्रेशर का आसान ईलाज	29
कंधियों से गोशत नोये जाते थे	19	मुफ्तलिफ़ बीमारियों और परेशानियों	
मुसीबत छुपाने की इजीवत	20	का इरानी ईलाज	29

येड रिसाला पढ लेने के आ'द सवाब की निघ्यत से किसी को दे दीजिये

40 साल के आ'माल....

❁ ४० साल अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ लिखते हैं : जो मस्जिद में दुन्या की बात करे, अस्वाहल عُزُّوَجَلَّ (उस के यालीस बरस के नेक आ'माल अकारत (या'नी बरबाद) इरमा दे. ¹ ❁ जिस ने कस्दन (जान जुळ कर) अेक वक्त की (नमाज) छोडी उजारों बरस जहन्नम में रहने का मुस्तहिक (हकदार) हुवा ² ❁ उजरते सय्यिदुना उमर इरुक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कातिलाना हल्वे में शदीद जप्मी होने के बा वुजूद नमाज अदा इरमाई. ³

1 : इतावा र-अविय्या, जि. 16, स. 311 अ उवाला - عَمْرُ الْعَيْنُون 190/13

2 : इतावा र-अविय्या, जि. 9, स. 158 3 - الْكِبَائِرُ ص 22 مُلَخَّصًا

मक-त-अतुल मदीना डी शापें

सूरत : वलिया भाई मस्जिद, प्वाजा दाना दरगाह के पास मो. 8488866394

भोअसा : इैजाने मदीना, बागे छिद्यत सोसायटी, कोलेज रोड मो. 9725824820

भअय : इैजाने मदीना, भेभश कोलोनी, बुन्याद नगर, डुंगरी शेरपुर रोड मो. 9327522145

भांडवी : इैजाने मदीना, तयबा मस्जिद के पास बन्दर रोड मो. 7383774763

जामनगर : पांय छाटी मो. 9327977293

मक-त-अतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी



इैजाने मदीना श्री डोनिया बगीचे के पास, मिरजापूर, अहमदशाबाद, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net